‘मन्दिर में रहो-२’
का परिचय
ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

बुधवार, १५ जुलाई, २०२०

पिछले चार महीनों से जब विश्व में एक ही नहीं बल्कि अनेक रूपों में उथल-पुथल हो रही है, सिद्धयोग संघम् नियमितता और उत्साह के साथ सिद्धयोग वैश्विक हॉल में एकत्र हो रहा है। हज़ारों सिद्धयोगी और उनके कई मित्र व उनके परिवार के सदस्य भी सत्संगों में—‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में भाग ले रहे हैं जो श्री मुक्तानन्द आश्रम के भगवान नित्यानन्द मन्दिर से सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित हो रहे हैं।

‘मन्दिर में रहो,’ सार्वभौमिक संघम् के लिए गुरुमाई चिद्विलासानन्द का प्रसाद है। और इन सत्संगों में श्रीगुरुमाई ने जो सिखावनियाँ प्रदान की हैं—जो प्रज्ञान उन्होंने दिया है, लोगों के अध्ययन व अभ्यास के लिए, आत्मसात् करने व परिपालन करने के लिए—उनका क्या कहना? उनमें सब कुछ समाहित है। वे सब कुछ *हैं*। श्रीगुरुमाई की हरेक सिखावनी में इतनी सामर्थ्य निहित है कि आजीवन उसका अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि यही तो बात है श्रीगुरुमाई की सिखावनियों में—वे समयातीत होने के साथ-साथ वर्तमान समय में कितनी सटीक हैं।

फिर सिद्धयोग सत्संग का अनुभव भी है और साथ ही वह विशिष्ट रूप व आकार भी जो ‘मन्दिर में रहो’ सत्संग ने ग्रहण कर लिया है। आरती के दियों की वे झिलमिलाती ज्योतियाँ जो मन्दिर के वातावरण को एक विशेष दीप्ति से भर देती हैं; वे नामसंकीर्तन और भजन जो वैश्विक हॉल में सभी के अन्तर में व चारों ओर उमड़ते हैं; वे स्वर जो लोगों के हृदय के बीच की दूरी को मिटाकर उन्हें एक-साथ जोड़ते हैं। वार्ताएँ देते शिक्षकगण और कहानियाँ सुनाते कहानीकार जो विभिन्न दृष्टिकोणों से सिद्धयोग पथ की सिखावनियों का अन्वेषण करते हैं। बड़े बाबा जी की मूर्ति के चारों ओर सजे फल; पूजा वेदी के चारों ओर सुशोभित फूल और लम्बी-लम्बी पत्तियाँ जो आश्रम की भूमि पर उगे हैं और जो अपने चटकीले रंगों से मन्दिर की शोभा बढ़ाते हैं।

इस सबका मिला-जुला जो प्रभाव होता है वह, इसके अलग-अलग भागों से होने वाले प्रभाव से कहीं अधिक है। आपकी इन्द्रियाँ पूरी सजगता से भाग ले रही होती हैं और वे प्रसन्न होती हैं, हाँ—और फिर आप इन्द्रियजनित अनुभव के परे चले जाते हैं। आप ऐसे स्थान में पहुँच जाते हैं जो कहीं अधिक गहरा है, आप वहाँ प्रवेश पा लेते हैं जो सबसे परे है। 'मन्दिर में रहो' सत्संगों में बार-बार भाग लेने से आप स्वयं को अपने उन सद्गुणों से पुनः परिचित कराते हैं जो इस कठिन समय से गुज़रने के लिए आवश्यक हैं। आप अपने खुद के लचीलेपन व संकल्प के सम्पर्क में आते हैं। आप अपनी ही ताक़त व सौम्यता को जान पाते हैं, अपनी विवेकशीलता व आशापूर्णता को, अनुशासन का पालन करने की अपनी क्षमता को जान पाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि आप और भी अच्छी तरह से इन सद्गुणों का उपयोग कर पाते हैं ताकि आप खुद को सम्बल दे सकें व आपके जीवन में जिन लोगों को आवश्यकता है, उन्हें भी सम्बल दे सकें।

निस्सन्देह, सीधे वीडिओ प्रसारण के समापन के साथ सत्संग वास्तव में समाप्त नहीं हो जाता। सत्संग तो आपका अपने हृदय के सान्निध्य में होना है। जैसा कि गुरुमाई जी सिखाती हैं कि पूजा के किसी भौतिक स्थान में रहने के साथ-साथ, मन्दिर में रहने का अर्थ, अपने शरीररूपी मन्दिर में रहना, स्वयं अपने आत्ममन्दिर के गर्भगृह में रहना भी है। आपने भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में जो देखा और सुना होता है, उसे आप याद करते हैं; जो सिखावनियाँ आपको प्राप्त हुई हैं, आप उनका अध्ययन करते हैं; अपने चारों शरीरों [भौतिक, भावनात्मक, बौद्धिक व आध्यात्मिक शरीर] में उन सिखावनियों को आत्मसात् करते हैं और इस प्रकार आप अन्तर से अपने सम्बन्ध को और भी मज़बूत बनाते हैं व उसे बनाए रखते हैं।

मैंने पहले भी बताया है कि यह श्रीगुरुमाई की इच्छा है कि सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् में लोगों को 'मन्दिर में रहो' सत्संगों से कुछ न कुछ ऐसा मिले जिसे वे थामकर रख सकें; सीधा वीडिओ प्रसारण समाप्त होने के बाद भी उनके पास कुछ न कुछ ऐसा हो जिसकी वे सहायता ले सकें—और अध्ययन व अभ्यास कर सकें, जिसे वे आत्मसात् कर सकें व जिसका वे परिपालन कर सकें। उनकी इस इच्छा की पूर्ति के लिए 'मन्दिर में रहो' सत्संगों की मैनजिंग डायरेक्टर, रोहिणी मेनन ने एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग से यह अनुरोध किया है कि वे इन सत्संगों की *और अधिक* विषय-वस्तु, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर उपलब्ध कराएँ!

और यही हमें "Be in the Temple II" ['मन्दिर में रहो-२'] पर ले आया है। "Be in the Temple" ['मन्दिर में रहो'] के पृष्ठों पर आपको श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ, प्रवचन व अनुभव मिलेंगे। 'मन्दिर में रहो-२' वह संग्रह है जिसमें आपको 'मन्दिर में रहो' सत्संगों की और उनसे सम्बन्धित अन्य विषय-वस्तुएँ मिलेंगी, और इसमें और भी विषय-वस्तुएँ जुड़ती जाएँगी। इसका अर्थ

है, वक्ताओं और शिक्षकों की वार्ताएँ। इसका अर्थ है, सिद्धयोग संगीत जिसका गायन या पठन सत्संगों में किया जा चुका है या जिसका हम सत्संगों में गायन व पठन करते हैं। इसका अर्थ है, वे कहानियाँ जो आपने सुनी हैं, प्रकृति के वे वीडिओज़ जिन्हें कई 'मन्दिर में रहो' सत्संगों के आरम्भ में दिखाया गया है, तथा और भी बहुत कुछ।

मैं आशा करती हूँ कि आप इन पृष्ठों को अनेक बार देखेंगे और हर बार जब आप ऐसा करेंगे तो आपको कोई नई समझ प्राप्त होगी—आप नए रूप में ऐसा कुछ समझ पाएँगे जिसके बारे में पहली बार में आपने विचार न किया हो या फिर शायद उसे पूरी तरह समझ न पाए हों। मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि यहाँ पर जो साधन उपलब्ध हैं, उनका अध्ययन करने के लिए, अपनी अन्तर्दृष्टियों को लिखने के लिए और आप जो सीखते हैं, उसे सक्रिय रूप से अपने जीवन में उतारने के लिए समय निकालें। और मेरी यह कामना है कि हर बार जब आप सत्संग के अपने पसन्दीदा पहलुओं को पुनः-पुनः देखने यहाँ पर आएँ तो आप केवल अपने मन में ही नहीं, बल्कि अपनी सम्पूर्ण सत्ता में और सबसे बढ़कर अपने हृदय में, यह स्मरण रखें कि मन्दिर में रहना क्या होता है।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।